RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

मलिक मोहम्मद जायसी के पदमावत के प्रमुख नारी पात्र

सुनील कुमार

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

Keywords
ऐतिहासिक, पद्मावती, संस्कृति, मध्यकाल आदि।

ABSTRACT

मलिक मोहम्मद जायसी का मध्यकालीन साहित्य में अहम् योगदान है। जायसी द्वारा रचित पद्मावत भारतीय प्रेम भावना एवं मसनवी प्रेमकथा के रूप में समन्वित है। जायसी की स्त्रीविषयक दृष्टि की बात करें तो जायसी ने भारतीय समाज की मान्यता के आधार पर ही हस्तिनी, सिंहनी, चित्रिनी और पद्मिनी स्त्रियों का वर्णन किया है। जायसी ने भारतीय संस्कृति के अनुसार स्त्री के श्रृंगारों का वर्णन पद्मिनी स्त्रियों के संदर्भ में किया है। प्रस्तुत शोधपत्र में पद्मावत के विभिन्न स्त्री पात्रों का वर्णन किया है। जिनमें कुछ मुख्य नारी पात्र हैं व कुछ गौण नारी पात्र में वर्गीकरण करके उनके चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख भी किया है।

प्रमुख नारी पात्र

1. पदमावती

सौन्दर्यमयी– पदमावती सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन और रानी चम्पावती की पुत्री है। जन्म से ही यह कन्या इतना सौन्दर्य लेकर प्रकट हुई कि पूर्णिमा के पूर्ण चंद्र की कला लजाकर धीरे–धीरे घटकर कम हो जाती है। पद्मावती में सौंदर्य के साथ–साथ पांडित्य का मणि–कांचन संयोग हुआ था। उसे पाँच वर्ष की अवस्था में विद्याध्ययन हेतु बैठाया गया, अल्पकाल में ही उसने धर्मग्रंथ, वेदादि का ज्ञान प्राप्त कर लिया। इसकी प्रशंसा चारों खंडों के राजाओं में फैल गई।

"भै पदुमावति पंडित गुनी, चहुं खण्ड के राजन्ह सुनी,
सिंघल दीप राज घरबारी, महा सुरुप दैय औंतारी।"[1]

पक्षी–प्रेम – उसके पास महापंडित हीरामन नामक तोता था। वे दोनों साथ रहकर वेद–शास्त्रादि का पाठ करते थे। पद्मावती को पक्षियों से विशेष प्रेम था। यही कारण है कि राजा द्वारा दिए गए तोते के वध के आदेश को उसने सफल नहीं होने दिया। सेवकों से राजा को यही कहला भेजा कि पिता की आज्ञा शिरोधार्य है। किंतु तोता पक्षी मात्र है, वह रटना जानता है, उसके पास स्वयं की सूझ–बूझ, बुद्धि नहीं है। वह अपनी बुद्धि चातुर्य से तोते की रक्षा करती है। परन्तु बुद्धिमान तोता अपने को असुरक्षित जानकर एक दिन उड़ जाता है। राजा रत्नसेन का मार्गदर्शन करता हुआ तोता पुनः पद्मावती के पास आता है, वह उसे देखने ही अत्यन्त प्रेम विह्ल हो गले लगाकर रो पड़ती है।

क्रीड़ा–प्रिय– पद्मावती सहेलियों के साथ हास्य–विनोद करती हुई मानसरोवर पर कभी स्नान हेतु जाती है। वे वहाँ अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ करती है। कभी आनंद विभोर हो हिंडौला झूलती है। वे सभी वर्तमान में नैहर में रहते हुए सभी सुख–आनन्द का उपभोग कर लेना चाहती है, क्योंकि भावी जीवन में उन्हें ससुराल का नियंत्रणमय जीवन, सास–ससुर, पति, ननद की कठोर भाव–भंगिमाओं का सामना करना होगा। यह राग–रंगमय जीवन उन्हें वहां अलभ्य रहेगा। पद्मावती में सखी जनों के प्रति स्नेह एवं सहानुभूति की भावना की थी। जल–क्रीड़ा के समय सखी का हार खो जाने पर वह स्वयं जल में बैठकर हार ढूंढ निकालती है तथा सखी को चिन्ता मुक्त करती है।

पदमावती को उत्सवादि मनाना अत्यन्त प्रिय था। वह बसन्तोत्सव मनाने तथा विश्वनाथ की पूजा हेतु अनेक सखियों के साथ साज–श्रृंगार कर देवमंडप में जाती है। सभी सखियाँ परस्पर अभिवादन करती है तथा फल–फूल इत्यादि लेकर पूजा करती है, फाग मनाती है। कभी होली खेलती है। दीर्घ अवधि प्रतीक्षित बसंत का त्यौहार आया था, नायिका पद्मावती उसे हर्षोल्लासपूर्वक मनाना चाहती है। उसके विनोदी स्वभाव का परिचय हमें 'पदमावती रत्नसेन भेंट' खंड में प्राप्त होता है। वह रत्नसेन के जोगी वेश का मधुर व्यंग्यमय परिहास करने लगती है।

धार्मिक वृत्ति– पद्मावती का ईश्वर में परम विश्वास है। अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु वह देव आशीर्वाद की अभिलाषिणी भी है। अतः वह देव मंदिर में जाकर अपने लिए योग्य वर–प्राप्ति का मनोकामना पर कलश चढ़ाने की मनौती है।

काम भावना – यौवन के प्रांगण में प्रथम चरण रखते ही राजकुमारी पद्मावती में काम के उद्धेक का प्राधान्य परिलक्षित होता है। वर प्राप्ति की इच्छा से हीरामन तोते से कहती है–

"सुनु हीरामनि कहौ बुझाई। दिन–दिन मदन सतावै आई।
पिता हमार न चालै बाता। त्रासहिं बोलि सकै नहि माता।
जोवन मोर भयउ जस गंगा। देहं देहं हम्ह लाग अनंगा।।"[2]

RRIJM 2015, All Rights Reserved

चतुर तोता उड़ गया, उसने राजा रत्नसेन से पद्मावती का रूप वर्णन किया। वह प्रेमयोगी होकर सिंहलगढ़ की ओर चल पड़ा। इसी योग के प्रभाव से पद्मावती प्रेम के वशीभूत हो विरह व्यथिता हो उठी।

आत्मोसर्ग– जब राजा रत्नसेन सुरंग पार कर गढ़ में प्रवेश कर रहा था। प्रातः काल हो गया, वह चोर समझा गया और बंदी बनाया गया तथा उसके लिए प्राणदण्ड की घोषणा हुई। पद्मावती ने ज्योंहि यह सूचना सुनी, वह भी अपने प्राण देने के लिए उद्धृत हो जाती है–

> "हीरामनि जौं बात यह कही। सुरुज के गहन चाँद गै गही।
> सुरूज के दुःख जौं ससि होइ दुखी। सो कत दुःख मानै कर मुखी।।"[3]

चतुर गृहिणी– वह रत्नसेन की सहचारिणी है। समुद्री यात्रा करते समय रत्नसेन के गर्वभाववश जब सब कुछ विनिष्ट हो जाता है, मार्ग व्यय हेतु उसके पास कुछ भी अवशिष्ट नहीं रह जाता। उस समय पर वह दुर्दिन के लिए बचा कर रखे हुए लक्ष्मी द्वारा दिए गए रत्नों को यात्रा को पूर्ण करने के लिए रत्नसेन को देती है। सामान्यतः नारी में यह चार्तुर्यपूर्ण संचयन बुद्धि होती है, पदमावती उसी का परिचय इस अवसर पर देती है।

दूरदर्शिका – पद्मावती दूरदर्शिका नारी है। राजा रत्नसेन ने आवेशवश राघव चेतन को देश निष्कासन का आदेश दे दिया। उसे सुनकर पद्मावती चिंतित हो उठती है। पति का यह कार्य अवश्य विपत्ति का कारण बनेगा। अतः सूर्य ग्रहण की दक्षिणा देने के बहाने वह राघव चेतन को बुलावा भेजती है तथा अपना स्वर्ण कंगन दे प्रसन्न करना चाहती है।

पदमावती ने जब सुना कि राजा रत्नसेन बंदी हो गया है। ऐसी कठिन परिस्थिति में गोरा–बादल को अपने सच्चे हितैषी और वीर रूप में जान वह उनसे सहायता मांगती है। गोरा–बादल यद्यपि राजा से असंतुष्ट हो गये थे, क्योंकि सुलतान को बंदी बनाने की उनकी सलाह को राजा ने नहीं माना था। पति द्वारा किए गए उन दोनों वीरों के प्रति अन्याय का समाधान करती हुई अत्यंत ओज भरे शब्दों में उन्हें गौरवान्वित करते हुए कहती है–

> "तुम्ह गोरा बादल खँभ दोऊ। जस भारथ तुम्ह औरु न कोऊ।"[4]

पदमावती की दयनीय स्थिति को जान दोनों वीर प्राण देने को उद्धृत हो जाते हैं।

ईर्ष्या– रूप व प्रेम गर्विता पद्मावती में स्त्रियोंचित्त सपत्नी भाव भी पराकाष्ठा पर पहुँचा है। राजा के चितौड़ जाने का समाचार सुनते ही वह पति को रानी नागमती की हीनता व्यक्त कर फुसलाना चाहती है।

> "नागेसरि जौ है मन तोरे। पूजि न सकै बोलसरि मोरे।"[5]

तथा चितौड़ आगमन पर ज्योंहि राजा नागमती के साथ रात्रि व्यतीत करके आते हैं वह दहाड़े मार कर रोती है। पद्मावती में हिंसात्मक वृत्ति एवं असहनशीलता भी इसी ईर्ष्या भाव के कारण अपनी चरम स्थिति पर पहुँच जाता है। दूतियों के मुख से नागमती की पुष्पित वाटिका होने की सूचना सुनकर शीघ्र ही वह उसकी वाटिका में जाकर मीठी–मीठी बातें करती है।

पतिव्रता– देवपाल की दूती अनेक प्रकार से उसे प्रलोभन देकर पथ–भ्रष्ट कर देना चाहती है। किन्तु ज्योंहि पद्मावती को इस चाल का ज्ञान होता है, वह उसे दण्डित कर निष्कासित कर देती है। पद्मावती का सतीत्व अडिग है। बादशाह अलाउद्दीन की दूती पुनः उसको अपने जाल में फंसाकर वियोगिनी बनाकर ले जाना चाहती है। किन्तु सखियों के समझाने पर वह योगिनी वेश धारण करने से रूक जाती है। पति को बंधन मुक्त करवाने के लिए वह साहस युक्त प्रयास करती है। रत्नसेन देवपाल की कुत्सित भावना के प्रतिकार हेतु युद्ध करने जाता है, किन्तु दुर्भाग्यवश वहीं स्वर्ग सिधार जाता है। रानी पद्मावती अपने सतीत्व की रक्षा हेतु सती होने का निर्णय लेती है।

2. नागमती

नागमती 'पद्मावत' की रूप गुण सम्पन्न नायिका है। एक पति–परायणा हिंदू स्त्री के रूप में कथा में उसके प्रेम की मार्मिक व्यंजना हुई है। अतः पद्मावत की कथावस्तु में उसका स्थान गौण नहीं हो पाया है। अपनी सहज स्वाभाविक विशेषताओं और दुर्बलताओं के कारण उसने पद्मावत की कथावस्तु को अनुप्राणित किया है।

गर्व– सर्वप्रथम नागमती को हम रूपगर्विता के रूप में देखते हैं। सुन्दरी होने के साथ ही पति की प्रिय होने के कारण उसमें अहंकार उत्पन्न हो गया। अतः हीरामन तोते से अपने सौंदर्य की प्रशंसा की आकांक्षा से पूछती है– वह सुन्दर है कि सिंहलद्वीप की पद्मिनी? तोता यह कहकर तिरस्कार कर देता है–

> "का पूँछहू सिंघल की नारी। दिनहिं न पूजै निसि अंधियारी।
> नागमती के मन को आघात पहुँचा तथा वह ईर्ष्या से भर उठी।"[6]

आवेगमयी– क्षुब्ध हुई नागमती भावी आशंका से कि यह तोता पद्मिनी की रूप चर्चा राजा से कर उसका अनिष्ट कर देगा, उसे मरवाने का आदेश दे देती है। वह क्रोध में धैर्य खो देती

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है, यह भी भूल जाती है कि तोता राजा का प्रिय पक्षी है। उसको मरवाने से पति रूष्ट हो जाएंगे। ज्ञात होते ही राजा नागमती को धमकी दे डालते हैं। विवश नागमती अत्यंत खेद, पश्चाताप भरे स्वर में यह कहकर चुप हो जाती है–

"मते हौं गरव जो कीन्हा। कंत तुम्हा मरम मैं चीन्हा। सेवा करै जो बारह मासा। एतनिक औगन करहु विनासा।"[7]

ईर्ष्याभाव– सपत्नी पद्मावती के प्रति ईर्ष्या होना स्वाभाविक था, उसी के कारण रत्नसेन जोगी होकर चला गया था, वह चिन्तानुर होकर ईर्ष्या से कहती है–

"नागरि नारि काहु बस परा। तेइं विभोहि मो सों चितु हरा।"[8]

उसकी ईर्ष्यावश असहनशीलता तब और भी बढ़ जाती है, जब राजा पद्मावती को लेकर नगर में आया। उसे उसका विमान तपते हुए सूर्य सदृश प्रतीत हुआ, जिसमें लपटें ही उठने लगती है। इसीलिए उसे दूसरे महल में ठहराया गया। जब राजा उससे मिलने गया, तो मानिनी नागमती मुख फेरकर बैठ गई। उसकी दृष्टि में पद्मावती का सौंदर्यहीन है–

"जौ पद्मावती हैं सुठि लोनी। मोरे रूप कि सरबनि होनी।"[9]

वह अपने पति उपालंभ देती है कि मन से पदमावती से अनुरक्त है। मुझसे फुसलाने वाली बातें करता है। 'नागमती– पदमावती विवाद खण्ड' में उसका क्रोध साकार हो उठता है। वह सपत्नी को निर्लज्ज, व्याभिचारिणी आदि अनेक अपशब्द कहती है तथा पटरानी होने का गर्व व्यक्त कर उसे सर्वभांति हीन व्यक्त करती है। रत्नसेन के बंदी होने पर वह पति की हित कामना से ईर्ष्या के साथ दुःख प्रकट करके ही रह जाती है।

"पद्मिनी ठगनि भइकित साया। जेहि ते रतन परा पर हाथा।"[10]

पति परायणा– नागमती को पति–परायण आदर्श नारी के रूप में दर्शाया गया है। जब राजा गृह त्याग कर जोगी होकर चलता है, तब वह दौड़कर सविनय अनुरोध करती है–

"कै हम लावहु अपने सायौं। कै अब मारि चलु सैं हाथों।
तुम्ह अस बिछुरे पीड पिरीता। जहवे राम तहाँ संग सीता।"[11]

तब रत्नसेन चला गया तथा वह अपने आभूषणों को तोड़ती हुई दिखाई गई है। इसके पश्चात् नागमती का विरह वर्णन उभर कर सामने आता है। नागमती के विरह–वर्णन का सूक्ष्म ढंग से विवेचन करते हुए विजयदेव नारायण साही लिखते हैं–

"परन्तु नागमती का विरह–वर्णन भावों की तीव्र और संगीतात्मक सम्प्रेषण मात्र ही नहीं है। वह हमारे आस्वादन मे कुछ और अनुभूतियाँ भी जोड़ता है। पूरा विरह–वर्णन 'बारहमासे की शक्ल में नागमती की वाणी के द्वारा रूप ग्रहण करता है। नागमती का पार्थिव शरीर और महल की सखियाँ शुरू की कुछ पंक्तियों में झीनी–सी दिखायी पड़ती है। अचानक कल्पना एक झटके से मुक्त हो जाती है और हमारा साक्षात्कार आवाज, सिर्फ आवाज से होने लगता है। धीरे–धीरे झीनी पार्थिवता भी केंचुल की तरह छूट जाती है। सारी पार्थिवता तिरोहित होने लगती। सखियाँ पिघलकर तिरोहित हो जाती है। चितौड़ का किला राजमहल सब तिरोहित हा जाता है। यहाँ तक कि नागमती का पार्थिव शरीर भी तिरोहित हो जाता है। वीरानों, जंगलों, वनखण्डियों, पहाड़ियों, गांवों, खेतों में टीस तो हुई एक साफ लेकिन अशरीरी आवाज शेष रह जाती है। यह आवाज पूरे देश के गुजरते हुए समय के मर्म में निरन्तर तैरती रही है। देश और काल दोनों अनावश्यक आवरण की तरह छूट कर गिर जाते हैं। मर्म, केवल मर्म ही रह जाता है। किसकी आवाज है यह? नागमती की? इस आवाज में एक पारदर्शी निवैयक्तिता है, जो नागमती को भी पीछे छोड़ जाती है।"

संक्षेप में नागमती का विरह, केवल नागमती का नहीं है। अपितु वह चितौड़ व उससे बढ़कर इतिहासलोक का है, जिसे छोड़कर रत्नसेन चला गया है।

इसके पश्चात् नागमती वन के एक पक्षी के माध्यम से रत्नसेन को संदेश भेजती है तथा जब रत्नसेन चितौड़ आता है, तब वह नागमती व पदमावती के मध्य सामंजस्य कराता नजर आता है। जब अलाउद्दीन रत्नसेन को बंदी बना लेता है, तब वह रत्नसेन को छुड़वाने के लिए कोई प्रयास करती नजर नहीं आती तथा अंततः अपने पति की मृत्यु पर वह भी पदमावती के साथ सती हो जाती है।

इस तरह पद्मावत में नारी के विभिन्न रूपों में दिखाने की कोशिश की है। जायसी समाज में स्त्री और पुरुष दोनों की समान भूमिका मानते हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वासुदेवशरण अग्रवाल, पदमावत, पृ॰ 75
2. वही, पृ॰ 173
3. वही, पृ॰ 245
4. वही, पृ॰ 662
5. वही, पृ॰ 379
6. वही, पृ॰ 82
7. वही, पृ॰ 89
8. वही, पृ॰ 340
9. वही, पृ॰ 434
10. वही, पृ॰ 438
11. वही, पृ॰ 126

RRIJM 2015, All Rights Reserved